गद्य (पुरूष)

भगवतः यह है धर्मपुरी नगर जिसके राजा हैं धर्मशील, जिनकी ख्याति और राज–सीमा–दिग–दिगंत में फैली है। इसी नगर के दो युवक ही हमारे नाटक के नायक–युगल हैं। उनमें से एक का नाम है देवदत्त शर्मा। विप्रोत्तम पंडित विद्यसागरजी का एकमात्र पुत्र है : सुधी पंडित, विद्याधनी, कामदेव–सा, सुन्दर, गौरवर्ण, कोमलकांत काया–जो प्रेम और न्याय के शास्त्राथों में दिग्गज पंडितों को परास्त कर चुका है, काव्य–कला में बड़े–बड़े महाकवियों को नीचा दिखा चुका हैं देवदत्त शर्मा, मानो धर्मपुरी में हर आँख का तारा। दूसरा है कपिल : राज–शस्त्रागार का स्तम्भ–पुरूष, कर्म कार लोहित का सपूत। मेघ–सा साँवला रंग, सादा–सा चेहरा–मोहरा, पर घरेलू कामकाज और शारीरिक शक्ति–सामर्थ्य में एकदम असाधारण। मुष्टि–युद्ध, लट–युद्ध, बाहु–क्रीड़ा, मल्ल–क्रीड़ा, अखाड़े के दाँव–पेच, कसरत–क़वायद, तैराकी, उठा–बैठी, दौड़ा–दौड़ी, उछाड़–पछाड़–हर कला में अद्वितीय।

नाटक–आग़ा हश्र काश्मीरी के चुनिंदा ड्रामें (कोर्ट मार्शल)

(पेज–592–593)

उर्दू (पुरूष)

सररिश्तेदार : आज हज़रत मलका–ए–मुअज्ज़िमा शम्सा के फ़ौजी क़ानून के मंजूर करदा और नवाब कल्लू के हस्बे मंशा बारहवीं रेजिमेन्ट के लेफ़्टिनेन्ट शहरयाद वल्द शेरअफ़गन मुलिज़म पर मंदरजा ज़ैल क़ाइम क़ायम किए गए हैं, अव्वल अफ़सरान–ए–बाला का बिला इजाज़त छावनी से ग़ैर–हाज़िर रहना, दोम बग़ैर इस्तिफ़ा दिये मुलाज़मत छोड देना। सोम अपने अफ़सर तुग़रल बेग पर बहालत अदाए फ़र्ज़ मुहलिक हमला करना, मज़कूरा बाला तमाम जराइम फ़ौजी अराक़ीन मनदरजा जैल के रूबरू पेश किएगए। जनरल शाहनवाज़, करनल ज़फ़र मिर्ज़ा, मेजर दिलावर खां डिप्टी ज़हूर बेग मुल्ज़िम ने अपनी बरीयत की ताईद में और मनदरजा बाला जराईम की तरदीद में जो सबूत पेश किए वो इस्तग़ासा की रूदाद से बेसूद ठहराए गए, लिहाज़ा अदालत ने मजबूर होकर बतारीख़ 25 महोहर्रम–उल–हराम सन 1206 हिजरी बरोज़ च्हार शम्बा बमुक़ाम क़ाहिरा कैम्प हुक्म दिया है के ठीक बारह बजे दिन के गोली मार कर नमकहराम शहरयार की ज़ोरदार जिन्दगी का ख़ात्मा कर दिया जाएगा। दस्तख़त इज्ज़त पाशा कोर्ट मार्शल 24 मोहर्रम 1206 हिजरी मक़ाम क़ाहिरा कैम्प।

पुरूष हेतु

पुरूष– मुक्तिबोध (पेज–47)
दादी माई (विजेन्द्र) कवि

पद्य

घूम रहा हूँ
धुँआ घुमड़ता हो जैसे अंदर
बे–चैन पूछता जब भी
मिलती दादी
कुछ झिझक, कुछ संकोच से
शब्द ठिठकते से
क्या हालचाल है, कहो दादी माई
फिर भूली सब छंद, ताल, लय, गान
पीछा करती अनुगूँजें ध्वनि की
कहती बड़े सबर से बाबू, जी मत बूझौ
बखत भौत बुरौ है
इतना कह सफेद पसन बालों को गूँधा
मैली गर्दन खुजलाई
घौंटू तक अपनी धोती खींची
बोली निगाह मिलाकर
लड़का बड़ा ख्वार है
सोचा एक अकेला है
साथ घना देगा मेरा
ब्याह कर दिया
बात–बात झिड़क सुनाता
अपनी–अपनी ही कहता है
दिन–रात औरत उसकी
कान भरा करती है उसके
मुझ में अनगिन खोट बताती है
वह उसकी ही बातें साँच मानता
बात–बात में गाली बकता है।